ISSN-2321-3981

बाल अहिल्या अंक

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

भाद्रपद २०८० सितम्बर २०२३

₹ ३०

लोकमाता देवी अहिल्याबाई के बाल्यकाल पर आधारित चित्रमय प्रस्तुति

भक्ति मुक्ति शक्ति युक्ति न्याय नीति साधिका, मालवा की राजरानी मातृभू-आराधिका
श्री अहिल्या लोक मातु! कोटि कोटि वंदना, नमस्कार बार बार श्रद्धा अधिकाधिका

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

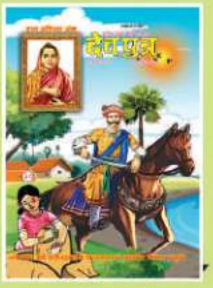

भाद्रपद २०८० ▪ वर्ष ४४
सितम्बर २०२३ ▪ अंक ०३

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फडके

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	२०० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	२००० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१५० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

आधुनिक भारत के इतिहास में जिन महान नारियों का नाम विशेष सम्मान से लिया जाता है उनमें पुण्यश्लोका लोकमाता अहिल्यादेवी होळकर का नाम अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उनके जीवन चरित्र, कार्यों एवं कार्यशैली पर इतिहासकारों ने अनेक शोधपूर्ण ग्रंथ रचे हैं। वे एक सामान्य से किसान परिवार की ग्रामीण बालिका से इन्दौर और महेश्वर के राज सिंहासन पर मालवा की महारानी बन कर कैसे बैठ सकीं? यह विस्तार से पढ़ने-समझने-गुनने की बात है। लेकिन वे कैसे सारे राष्ट्र में लोकमाता बनकर प्रसिद्ध हुईं? प्रसिद्धि भी ऐसी कि आज २००-२५० वर्षों बाद भी उनके निर्माण, उनकी योजनाएँ और उनके प्रति श्रद्धा प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं, यह जानना हो तो हमें उनके बचपन के संस्कारों से आरंभ करना होगा।

बच्चो! कहा जाता है 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' अर्थात महान लोगों के लक्षण बचपन से ही प्रकट होने लगते हैं। कुछ गुण मनुष्य जन्म से लेकर आता है, कुछ अपने प्रयत्नों से विकसित करता है। देवी अहिल्याबाई का बचपन भी ऐसा ही है। उनकी बुद्धिमत्ता, सच्चरित्रता, जिज्ञासु भाव, सीखने की ललक, साहस, धैर्य, विनयशीलता, निर्भीकता और रूढ़ीवाद के विरुद्ध सृजनात्मक सकारात्मक सोच ऐसे गुण थे, जो बाल्यकाल से ही दिखने लगे थे। उनका बचपन का पिता के घर का परिवेश और ससुराल का परिवेश एकदम भिन्न था। लेकिन पिता के घर के संस्कार का विकास इस नए परिवेश में करके वे इतनी महानता को प्राप्त करने वाली विलक्षण विभूति बन सकीं।

उनके ऐसे ही प्रेरक बाल-जीवन पर केन्द्रित है यह विशेषांक। 'बाल अहिल्या' के प्रेरक बचपन की छाप आपके मन को भी संस्कारित कर उसमें समाज एवं देश के लिए सर्वस्व अर्पण करने की प्रेरणा जमा होगी, ऐसा मानते हुए मैं यह अंक आपको सौंप रहा हूँ। अपनी प्रतिक्रिया से अवश्य अवगत कराइए।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

बाल अहिल्या अंक

॥ अनुक्रमणिका ॥

- जन्मभूमि - ०५
- माता-पिता - ०६
- पुत्री की कामना - ०७
- ईश्वर से विनंती - ०८
- सूनी कलाई - ०९
- कन्या रत्न का जन्म - १०
- भविष्य की जिज्ञासा - ११
- चिंता की रेखाएँ - १२
- शिवभक्ति के अँकुर - १३
- भावी का संकेत - १४
- शिव-शक्ति की लगन - १५
- गौ सेवा - १६
- सबकी चिंता - १७
- धर्म में आस्था - १८
- समरसता का आग्रह - १९
- शिक्षा की ललक - २०
- शिक्षा की लगन - २१
- उमंग भरा बचपन - २२
- ॐ नमः शिवाय - २३
- भाग्य का पलटा पन्ना - २४
- निर्भयता - २५
- पारखी की दृष्टि - २६
- प्रथम परिचय - २७
- स्नेह की प्रगाढ़ता - २८
- परिवार से परिचय - २९
- राजसी अतिथि, किसान का घर - ३०
- स्वागतम् - ३१
- समधी बने - ३२
- माँ की सीख - ३३
- गाँव की बेटी : मालवा की राजवधु - ३४
- ससुराल में स्वागत - ३५
- माँ जैसी सासू माँ - ३६
- नया परिवार : नया परिवेश - ३७
- मित्र जैसे श्वसुर - ३८
- शक्ति का स्वरूप - ३९
- अन्नपूर्णा का रूप - ४०
- सरस्वती की साधना - ४१
- खट्टे मीठे स्वर - ४२
- राजनीति, युद्धनीति, - ४३
- न्याय-नीति - ४४
- दहेज नहीं शिक्षा दो - ४५
- वैधव्य : अभिशाप न बने - ४६
- धर्म-नीति - ४७
- एकाकी साधिका - ४८
- लोकमाता - ४९
- शिवमयी अहिल्या - ५०

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।

विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

जन्मभूमि

भारत देश के दक्षिण भाग के निकट एक प्रान्त है महाराष्ट्र। इसी प्रांत के अहमदनगर के जामखेड़ के पास एक गाँव है चौंडी। महाराष्ट्र के सामान्य ग्रामों जैसा ही। सीधे-सादे लोग, नियमित दिनचर्या, आजीविका खेती-किसानी और पशुपालन।

माता-पिता

इसी गाँव के पाटील थे माणकोजी शिंदे। परिश्रमी कृषक। गाँव में सबसे मिलनसार सबके आत्मीय। धार्मिक स्वभाव की थी उनकी पत्नी सुशीला की दिनचर्या थी घर-परिवार एवं बच्चों के लिए गृहस्थी के कार्य सम्हालना और संतोष से भरा जीवन जीना।

पुत्री की कामना

माणकोजी और सुशीला की दो संतानें थीं, दोनों पुत्र। माता-पिता चाहते थे एक पुत्री तो अवश्य ही होना चाहिए। बेटे तो अपने ही कुल का नाम करते हैं पर बेटी दो-दो कुलों का नाम बढ़ाती है। हम समाज से वधू के रूप में किसी की बेटियाँ लाएँ तो किसी घर के लिए कोई बेटी दें भी सही, नहीं तो हम पर तो समाज का ऋण ही रहेगा न?

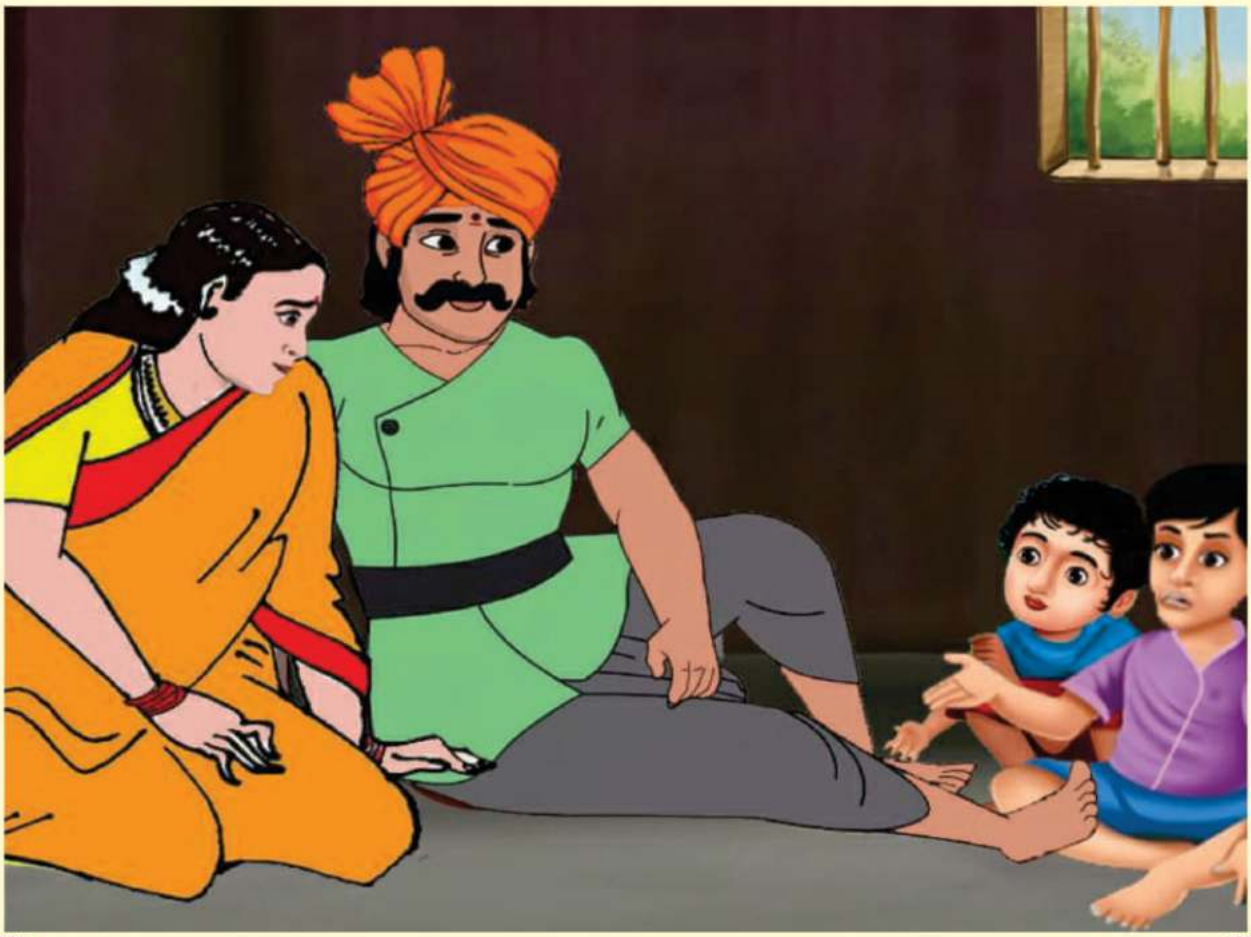

ईश्वर से विनंती

वह प्रतिदिन ईश्वर से प्रार्थना करती ''हे परमात्मा! कोई श्रद्धा, भक्ति, ममता और सद्गुणों से भरपूर एक बेटी अवश्य दो।'' माणको जी भी बेटी को बोझ मानने वाले पिता बिलकुल न थे, बल्कि बेटी भगवान का वरदान ही है, यही दृढ़ विचार था उनका।

सूनी कलाई

दोनों भाई भी श्रावण की पूर्णिमा आती तो अपनी सूनी कलाई देख उदास हो जाते। गाँव के लगभग सभी लड़के अपनी बहनों से राखी बँधवाकर प्रसन्न होते। ये दोनों उदास होकर आपस में कहते– ''काश! हमारी भी कोई बहिन होती।''

और एक दिन परमात्मा ने सबकी प्रार्थना सुन ली।

कन्या रत्न का जन्म

गरमी के दिन थे। वर्ष १७२५ के मई मास की ३१वीं दिनाँक, भारतीय कालगणना की महाराष्ट्रीय मान्यता के अनुसार विक्रम संवत् १७३२ के वैशाख मास के कृष्णपक्ष की सप्तमी तिथि का दिन। आज माणकोजी के गाँव के छोटे से घर में आनंद छा गया। आज उनके घर एक कन्या ने जन्म लिया था। नाम हुआ अहिल्या।

भविष्य की जिज्ञासा

ज्योतिषी जी ने जन्मनक्षत्र देखकर कहा– ''यह कन्या बहुत यशस्वी होगी। किसी बहुत सम्पन्न घराने में जाएगी। इसकी यश–कीर्ति सारे भारत में सदियों तक फैली रहेगी।''

माता–पिता के मुख आनंद से चमक उठे। ''और कुछ.... आगे बताइए न पण्डित जी।'' माँ ने पूछा।

चिंता की रेखाएँ

''आगे..... आगे रहने दो सुशीलाबाई! अभी तो आनंद मनाओ। शेष सब शिवशंभु सम्हालेंगे।'' ज्योतिषी जी बोले।

माता-पिता के मन में आशंका उठी अवश्य कुछ ऐसा है जो पंडित जी जानकर भी बता नहीं रहे हैं। पंडित जी भी यह समझ रहे थे बोले- ''शिवशंभु सबका भाग्य बदल सकते हैं, जैसे गिरिराज किशोरी पार्वती का बदल दिया था। शिव को मनाओ सब मंगलमय होगा।''

शिवभक्ति के अंकुर

धीरे-धीरे अहिल्या बड़ी होने लगी। घर के एक कोने में छोटा-सा पूजा स्थान था। घुटनों के बल चलती हुई अहिल्या बार-बार उसी ओर भागती। माँ बार-बार पकड़ती खिलौने देती पर अहिल्या को तो देवस्थान ही भाता था।

एक दिन माँ का ध्यान चूका और अहिल्या ने शिवजी की छोटी पिण्डी उठा ही ली। सामान्यत: बच्चे कोई भी प्रिय चीज उठाते हैं तो उसे मुँह में डालने का प्रयत्न करते हैं पर अहिल्या ने तो ऐसा नहीं किया। वह शिवलिंग को हाथ में लिए देखती रही, देखती रही।

भावी का संकेत

थोड़ी और बड़ी हुई तो कुछ बच्चियाँ उसकी सहेलियाँ बन गईं। किसानों की बेटियाँ, माटी से बहुत प्रेम करतीं। आँगन में साथ-साथ खेलतीं, माटी के खिलौने बनातीं मानों भविष्य के सपने बुनतीं।

सहेलियाँ बनाती चूल्हा, बर्तन, चकला- बेलन या कोई घर-झोंपड़ी, कोई-कोई बैलगाड़ी या गुड्डे-गुड़िया भी बनाने का प्रयत्न करतीं पर अहिल्या बनाती हाथी, घोड़े, रथ, कभी मकान बनाती तो किले जैसा आकार बन जाता।

शिव-शक्ति की लगन

सहेलियाँ पूछतीं-''अरी! अहिल्या यह क्या है? ऐसा घर तो हमने देखा नहीं और इतने हाथी-घोड़े का क्या करोगी? अरी! गाय बनाती तो दूध देती, बैल बनाती तो खेत में काम आते। अरे! हम लड़कियों का काम क्या? चौका-चूल्हा! चूल्हा, बर्तन बनाना आना चाहिए।''

कोई ठिठौली करती- ''अरी! दूल्हा-दुल्हन बना। अच्छा दूल्हा बना तो सुख से रहेगी।'' अहिल्या इस टोकटाक से रूठकर हाथी घोड़े एक ओर सरका देती और अनमने यों ही मिट्टी सांधती रहती।

थोड़ी देर बाद सहेली ने देखा- ''अरे! ये क्या बनाया? ये तो भोलेशंकर की पिण्डी है अहिल्या!'' अहिल्या ने देखा अनजाने ही यह तो सचमुच शिवलिंग बन गया था।

गौ-सेवा

और बड़ी हुई तो माँ के कामों में हाथ बँटाने लगी। आँगन लीपना, बुहारना, गाय को चारा डालना, अनाज साफ करना।

माँ कहती-''अरी! रहने दे। सारे जीवन यही तो करना है। अभी माँ के घर है तब तक खेलकूद ले। ये मैं कर लूँगी।''

''सारे जीवन यही क्यों करूँगी?'' अचानक उसका प्रश्न सुन माँ चौंक गईं। पर बच्ची की बात समझ हँसकर टाल दिया।

सबकी चिंता

वह आँगन में पक्षियों को दाना डालती तो पचासों पक्षी उसके पास आ जाते। द्वार से कोई भिक्षुक निकलता तो छोटी-छोटी अँजुरी भर अन्न देने में उसे इतना आनंद आता कि दीन-दुखी भिखारी भी उसका भोला मुखड़ा देख मुस्करा देता। वह तुतलाती हुई कहती- ''बाबा! तल बी आना।'' (बाबा! कल भी आना)

धर्म में आस्था

छोटी-सी अहिल्या अपने पिता के साथ मंदिर जाती। वहाँ होने वाला पंडितों द्वारा वेद-पाठ उसे बड़ा अच्छा लगता। कभी उनकी नकल करने का प्रयत्न करती तो पिताजी टोकते- ''ना बेटी! लड़कियाँ वेद-पाठ नहीं करतीं।'' ''क्यों बाबा? वेद तो ब्रह्माजी ने बनाए न और लड़कियों को भी, तो लड़कियाँ वेद-पाठ न करें।'' पिता क्या समझाते? पर जो प्रथा थी वह थी, प्रारंभ में तो पंडित बच्ची के तर्क को बचपना मानकर मुस्कुरा देते।

समरसता का आग्रह

एक बार मंदिर में एक अछूत के प्रवेश को लेकर रोकटोक पर वह असहज होकर चिल्ला पड़ी। ''ये काका क्यों नहीं आ सकते मंदिर में? भगवान सबके हैं सब भगवान के। ये बुरे होते तो भगवान इन्हें बनाता ही क्यों? क्या भगवान अपने ही बनाये किसी व्यक्ति को पवित्र और किसी को अपवित्र मानकर भेद-भाव कर सकता है?''

पिता ने बेटी के मुँह पर हाथ रख चुप करना चाहा पर पंडितों की त्योंरियाँ चढ़ गईं। ''माणकोजी! तुम्हारी बेटी धर्म के मामलों में टाँग अड़ाने लगी है। सावधान हो जाओ।''

शिक्षा की ललक

भाई पाठशाला जाते। उनका पढ़ाई में मन न था। पर घर में बाबा और शाला में गुरुजी उन्हें जबरदस्ती ही सही, पर पढ़ाना चाहते थे। अहिल्या एक दिन उनके पीछे-पीछे शाला जा पहुँची। गुरुजी ने पूछा- ''क्यों आई हो बेटी?''

''मैं भी पढ़ूँगी, दादाओं की तरह।''

''लड़कियाँ नहीं पढ़ती वे बस घर के काम सीखती हैं।'' गुरुजी ने समझाया तो सारी कक्षा हँसकर अहिल्या का उपहास करने लगी। वह कारण पूछना चाहती थी पर कैसे पूछती?

शिक्षा की लगन

घर में पाटी पुस्तक छोड़। भाई खेलने निकल जाते तो वह उनकी पुस्तकें उलटने-पलटने लगती। पर बिना पढ़ाए बोलना तो आ सकता है लिखना-पढ़ना कैसे आता? उसके लिए तो कोई सिखाने वाला चाहिए। बड़े भाई सिखाते नहीं। गुरुजी मना कर चुके। पिता ने यह देखा तो घर पर ही उसे थोड़ा बहुत पढ़ना-सिखाने लगे।

उमंग भरा बचपन

छोटी-छोटी गगरियाँ लिए पाँच-सात हमजौली सखियों के साथ वह नदी पर पानी भरने जाने लगी। कोई जल्दी तो होती नहीं। बच्चियाँ वहीं खेलने लगतीं। वैसे अहिल्या खेलने में भी बहुत कुशल थी। परन्तु कई बार उसका मन खेल से जल्दी ही ऊब जाता। वह किसी गहरे सोच-विचार में खो जाती।

ॐ नमः शिवाय

नदी के किनारे गीली मिट्टी से उसने एक सुन्दर शिवलिंग बनाया। आसपास से जंगली फूल तोड़े। बिल्वपत्र का पेड़ ऊँचा था इसलिए पेड़ पर चढ़कर बिल्वपत्र तोड़े। फिर पिताजी से सीखा हुआ शिवस्तोत्र बुदबुदाते हुए भक्तिभाव से अपने बनाए शिवलिंग की पूजा करने लगी। खेल में लगी हुईं सहेलियाँ भी खेल छोड़ यह अनोखा काम देखने लगीं। पर अहिल्या को उनका पता भी न चला। वह तो गहरे ध्यान में डूब चुकी थी।

भाग्य का पलटा पन्ना

एक दिन वह नदी किनारे अपने शिवजी के ध्यान में इसी तरह मग्न थी कि तभी वातावरण की शांति को भंग करते हुए घोड़ों की टप-टप आवाज पास आती गई। बच्चियों ने समझा कोई सेना या सरदार आ रहे हैं। साथ ही यह विचार करके डर भी लगा कि न जाने ये कोई डाकू ही हों। वे डर कर आसपास पेड़ों की ओट में छुप गई।

निर्भयता

वे मालवा के सुबेदार श्री मल्हारराव होळकर और उनके साथी के घोड़ों की आवाज थी। वे घोड़ों को नदी पर पानी पिलाने ला रहे थे। सारी बच्चियाँ भाग गईं, पर यह कौन है, जो नन्हीं पार्वती जैसी अपने शिव के ध्यान में ऐसी डूबी है कि इतने शोर और भागदौड़ से भी इसका ध्यान न टूटा!!

तभी घोड़ा हिन-हिनाया। अहिल्या ने घुड़सवार देखे तो शिवलिंग से लिपट गई। मल्हारराव घोड़े से उतर पड़े एकटक बच्ची के शांत, निडर और तेजस्वी मुखड़े को देखते रहे।

पारखी की दृष्टि

कुछ पल बीते होंगे कि श्री मल्हारराव ने बाल अहिल्या के मस्तक पर धीरे से हाथ रखा। अहिल्या ने आँखें खोली। सामने एक राजपुरुष को देख वह आश्चर्य में डूब गई।

उन्होंने पूछा– ''कौन हो बेटी तुम? क्या नाम है? किसकी बेटी हो? रहती कहाँ हो?''

अरे! इतने धीर वीर श्री मल्हारराव, बच्ची का परिचय जानने को अधीर क्यों हो उठे कि एक साथ इतने सारे प्रश्न कर डाले।

प्रथम परिचय

अहिल्या ने उन्हें खड़े होकर प्रणाम किया फिर बोली– ''मैं अहिल्या हूँ। माणकोजी शिंदे का नाम आपने सुना होगा, सारा गाँव जानता है उन्हें। मैं उनकी बेटी हूँ। पास ही चौंडी गाँव में रहती हूँ।''

''और यहाँ क्या कर रही थीं? तुम्हारी सहेलियाँ भाग गईं तुम नहीं भागी? डर नहीं लगा घोड़ों से, घुड़सवारों से?''

''नहीं! मैं अपने गाँव में, अपने शिवजी की पूजा कर रही थी। बाहर वालों से क्यों डरूँ? भाग जाऊँगी तो, मेरे शिवजी का ध्यान कौन रखेगा? तुम्हारे घोड़े का क्या भरोसा? शिवजी पर ही चढ़ जाएँ?''

स्नेह की प्रगाढ़ता

बच्ची की निर्भयता से मल्हारराव चकित थे। इतनी सी आयु में इतनी निडरता! ऐसी निर्णय क्षमता! यह तो किसी राज्य की महारानी बनने योग्य है। उनका मानव-पारखी अनुभव कह उठा। वे स्नेह से बोले- ''बेटी! हमारे घोड़े शिवजी पर नहीं चढ़ते। हम भी तो शिवशंभू के भक्त हैं।'' उन्होंने श्रद्धा से शिवलिंग को नमन किया।

''तो आप भी शिवशंभू के और मैं भी, तब तो हम दोस्त हो गए, है न?'' फिर स्वयं ही बुदबुदाई ''पर आप तो बहुत बड़े हैं, जाने कहाँ रहते हैं? आपसे कैसी दोस्ती?''

परिचय गहरा हुआ

मल्हारराव ने कुछ सोचा फिर बोले– ''दोस्ती तो हमें तुमसे करना ही है। अपने घर ले चलो, तुम्हारे आई–बाबा से पूछ लें। उन्हें भी तुम्हारा हमारे साथ रहना पसंद है या नहीं?''

''मैं घर ले चलूँगी, पर आपके साथ क्यों रहूँगी? मेरी गाय का, मेरी माँ का और मेरे इन शिवजी का ध्यान कौन रखेगा, आपके साथ चली गई तो?''

''गाय का ध्यान रखेंगी तुम्हारी आई, आई का बाबा और बाबा का शिवजी।'' ''शिवजी का? वह तो मैं ही रखूँगी न?''

''शिवजी तो सबका ध्यान रख सकते हैं पर तुम चाहोगी तो शिवजी को साथ ले चलेंगे।'' मल्हारराव बोले। ''पर जाना कहाँ होगा?'' अहिल्या ने पूछा। उत्तर मिला ''अभी तो तुम्हारे घर।''

राजसी अतिथि, किसान का घर

माणको जी के कानों में बात पहले ही पहुँच गई कि गाँव में मालवा के सूबेदार जी आए हैं। ''पर क्यों?'' पाटील होने से यह चिंता स्वाभाविक थी। तब तक वे अहिल्या के साथ उन्हीं के द्वार पर आ चुके थे। माणको जी ने सोचा ''कहीं अहिल्या ने तो कोई बचपना न दिखा दिया। बहुत बोलती है यह। किसी से डरती नहीं।'' फिर सोचा ''हावभाव से तो दोनों प्रसन्न दिख रहे हैं? फिर बात क्या है, जो राजसी अतिथि हमारे द्वार आ रहे हैं!''

स्वागतम्

''नमस्ते माणको जी!''

''नमस्कार सरकार! अहो भाग्य हमारे गाँव में जो आपके चरण पड़े। आइए। अन्दर आइए।''

''सरकार! मैं गरीब किसान आपके लायक तो बैठने की जगह भी नहीं है मेरे यहाँ?'' मल्हारराव खाट पर बैठ गए। ''आओ हमारे पास बैठो आप भी।'' मल्हारराव ने कहा। ''नहीं मालिक! कहाँ राजा भोज और कहाँ गंगू....।''

''अरे भाई! आप हमारी दोस्त के बाबा साहेब हैं। बैठिए, बैठिए।'' माणको जी संकोच सहित सामने एक खाट पर बैठ गए।

समधी बने

जलपान करते हुए मल्हारराव ने माणको जी का परिचय प्राप्त किया और एक प्रस्ताव रखा।

''पाटील साहब! आप स्वीकृति दें तो आपकी बेटी को हम अपने पुत्र खण्डेराव की पत्नी के रूप में अपना बनाना चाहते हैं।''

''ऐं! क्या कह रहे हैं सरकार?'' पाटील ने आँखें मली। ''मैं स्वप्न देख रहा हूँ क्या? मुझ गरीब किसान की यह साधारण-सी लड़की, इन्दौर के राज घराने की बहू! हे शिव शंकर! यह कैसे हो सकता है।''

''हो सकता है। शिवशंभू चाहे और आप स्वीकृति दें तो। आपकी बेटी के गुण जो हमने समझे हैं, आप भी नहीं समझेंगे।'' माणकोजी को अहिल्या के जन्म के समय ज्योतिषी की भविष्यवाणी स्मरण हो आई। उन्होंने पत्नी को पूछा। दोनों ने सिर झुकाकर स्वीकृति दे दी।

माँ की सीख

उस समय की प्रथा के अनुसार विवाह छोटी आयु में ही हो जाते थे। अहिल्या दस वर्ष की बच्ची ही थी। विवाह क्या होता है, पूरी तरह समझती भी न थी। भाई चिढ़ाते ''अब तुझे हमारा घर छोड़कर जाना होगा। दूर बहुत दूर इंदूर में। अपने गाँव जितना बड़ा तो बाड़ा होगा उनका। पर हाँ, वहाँ न आई होंगी, न बाबा।'' अहिल्या चिंतित हो उठती। माँ से कहती– ''माँ! मुझे नहीं करना विवाह?''

''वह तो करना ही पड़ता है बेटी! तू भाग्यवान है जो इतना बड़ा घर मिल रहा है तुझे?'' माँ समझाती।

''पर मुझे अपना घर ही पसंद है इसे क्यों छोड़ूँ?''

''वह भी छोड़ना ही पड़ता है बेटी! हर लड़की को।'' माँ ने आँखें अपने पल्लू से पोंछी। अहिल्या माँ के आँसू देख चुप रह गई।

गाँव की बेटी : मालवा की राजवधु

अहिल्या बाई का विवाह श्री मल्हारराव होळकर के एकमात्र पुत्र श्री खण्डेराव होळकर के साथ बहुत धूमधाम से सम्पन्न हुआ। श्रीमंत बाजीराव पेशवा ने नव वर–वधू को भेंट अलंकार देकर सम्मानित किया आशीर्वाद दिए। सारे मालवा वासी आनंद से झूम उठे। राजवाड़ा नई बहू के स्वागत में सज उठा।

ससुराल में स्वागत

विवाह करके अहिल्या इंदूर (इन्दौर) पहुँची तो राजवाडे की शान देखकर चकित रह गई। इतना बड़ा घर, इतने नौकर-चाकर, इतनी दासियाँ। सैनिक, पहरेदार, तोप, भाले, तलवारें। वह सोचने लगी ''जितनी देर में मैं दो बार पूरा चौंडी घूम आऊँ उतनी देर में तो इस बड़े घर का एक चक्कर भी न लगे। गाँव के हर रास्ते याद हैं पर यहाँ तो सब कुछ नया-नया है।''

माँ जैसी सासू माँ

सासू माँ गौतमाबाईसाहेब बहुत अच्छी थीं। बोलीं ''मैं सासूबाई हूँ, पर आई जैसी, समझी?''

''पर आई की गोद में तो मैं खेलते-खेलते कभी भी चढ़ जाती थी। आपकी साड़ी तो बहुत कीमती है, मैली न हो जाएगी?'' अहिल्या भोलेपन से बोली।

''नहीं? क्योंकि यहाँ तुम्हें मिट्टी में खेलने को भी न मिलेगा। अब तुम्हें मेरे साथ होळकर राजघराने के परम्परा और तरीके सीखना होंगे। अब मालवा की होने वाली रानी हो तुम।'' इतनी अच्छी बात भी तब अहिल्या को अच्छी न लगी। उससे आई, बाबा, भाऊ, गाँव, सहेली, खेल, सब छूट जो रहे थे।

नया परिवार : नया परिवेश

गौतमाबाईसाहेब के अतिरिक्त तीन सासूबाई और थीं अहिल्या की। द्वारकाबाईसाहेब, बनाबाईसाहेब, हरकूबाईसाहेब। अहिल्या के पति श्री खण्डेराव अहिल्या से दो वर्ष बड़े थे। मल्हारराव के एक दत्तक पुत्र श्री तुकोजीराव भी थे। वे आयु में मल्हारराव से बड़े थे। उनका विवाह पहले हो चुका था। वे अहिल्या को बहुत मानते थे अहिल्या भी उन्हें भाऊसाहेब कहकर मान देती थी।

मित्र जैसे श्वसुर

अहिल्या की जो इच्छाएँ उनके आई-बाबा भी पूरी न कर पाए वह श्री मल्हारराव ने पूरी कीं। वे छोटी बच्ची अहिल्या को पहले परिचय में दिए वचन के अनुसार उसके श्वसुर कम, दोस्त अधिक बने रहे। वचन तो उसके आई-बाबा को भी दिया था, अहिल्या को बहू (सूनबाई) नहीं बेटी मानने का। अहिल्या की दूसरी सासू माँ द्वारकाबाईसाहेब की पुत्री सीताबाई और अहिल्या मल्हार सरकार के लिए समान थी।

शक्ति का स्वरूप

अहिल्या ने मल्हार सरकार की सहमति से कई वे बातें सीखीं जो उस काल में महिलाओं के काम नहीं माने जाते थे। जैसे घुड़सवारी करना, तलवार चलाना। वह मल्हार सरकार से राजनीति, युद्धनीति, न्याय और प्रजा-पालन के अनुभव व प्रसंग सुनती और मन की गहराइयों में बसा लेती।

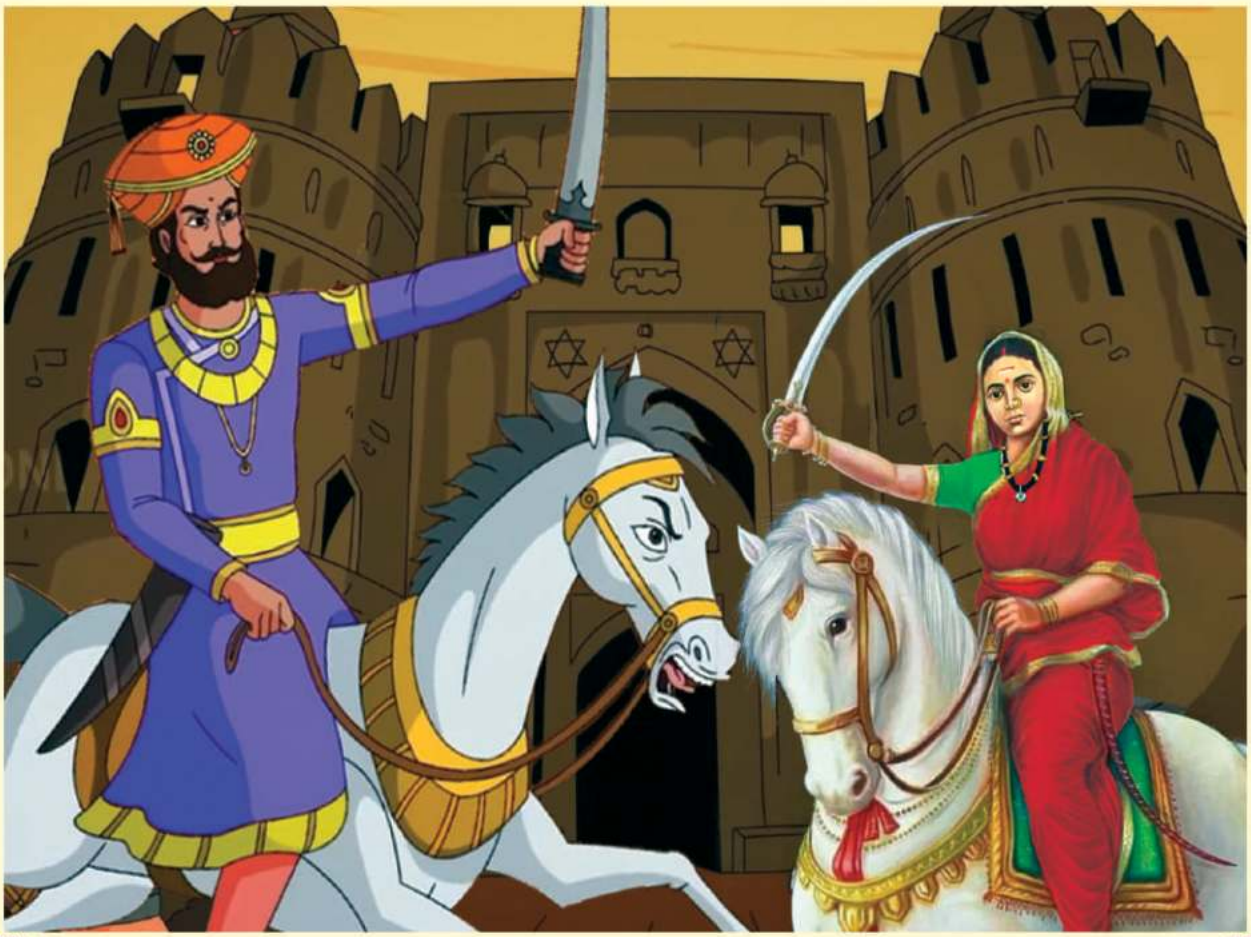

अन्नपूर्णा का रूप

सासू माँ गौतमाबाईसाहेब उसे स्त्रियों के योग्य रीति-रिवाज और गृहकार्य सिखाना चाहती थीं। अहिल्या खूब लगनशील और परिश्रमी थी वह श्वसुर से राजकार्य और सासू माँ से गृहकार्य सीख रही थी। राजकार्य में उसकी रुचि राजघराने के कई लोगों को नहीं सुहाती थी, उसके पति खण्डेराव को भी नहीं। उसे लगता लोग अहिल्या की योग्यता से कहीं उसको कम योग्य न समझने लगें।

सरस्वती की साधना

अपनी योग्यता से, विनम्रता से अहिल्या ने सबके बीच कई बार अपनी योग्यता प्रमाणित की। उसकी तर्कक्षमता अद्‌भुत थी। वह दीन-दुखियों के लिए बहुत करुणा रखती थी तो अन्यायी, अत्याचारियों के लिए अत्यन्त कठोरता। ससुराल में ही उसने पढ़ना-लिखना भी सीखा। मल्हारराव जी ने उसके लिए ज्ञान कक्ष में विशेष प्रबंध किया था। जहाँ विद्वान गुरुजी उन्हें प्रतिदिन पढ़ाने आते थे।

खट्टे मीठे स्वर

राजकुमार खाण्डेराव को संगीत में बड़ी रुचि थी। उनका राजकाज में बहुत मन न लगता था पर राज्य का उत्तराधिकारी होने का अभिमान पूरा था। वे अपना कोई प्रतिस्पर्धी नहीं चाहते थे, न परिवार में, न दरबार में। अहिल्या सब बातों में कुशल होते हुए भी पति की प्रतिस्पर्धी नहीं थी। वह अपने पति का बहुत सम्मान करती थी, और प्रेम भी, पर खण्डेराव को उसकी बढ़ती योग्यता खलने लगी थी। वह कई बार असहज हो जाता।

राजनीति, युद्धनीति

अहिल्या की योग्यता से मल्हारराव बहुत प्रभावित थे। वे उसमें मालवा का उज्ज्वल भविष्य देख रहे थे। अपनी पत्नी और अहिल्या के पति को यह बहुत अच्छा नहीं लगता है, यह जानकर भी वे अहिल्या को राजनीति के रहस्य समझाते, उसे प्रोत्साहन देते और विशेष प्रकरणों में उसका परामर्श लेते। अहिल्या सारी उपेक्षाएँ सहकर भी बाबासाहेब यानि मल्हार सरकार की हर अपेक्षा पर खरा उतरने का पूरा प्रयास करती।

न्याय-नीति

अहिल्या का बचपन विदा ले रहा था। अब उसके अंदर एक सुयोग्य शासिका, प्रजा को संतानों जैसा प्रेम करने वाली माता, धर्माभिमानी महिला, न्यायशीला रानी और लोकमाता आकार ले रही थी।

बाद में इस महान नारी ने कई युद्ध लड़े एवं मालवा के विकास के लिए अनेक योजनाओं पर कार्य किया।

दहेज नहीं शिक्षा दो

सामाजिक सुधार के अनेक क्रांतिकारी कार्य किए जैसे- दहेज प्रथा का विरोध।

महिलाओं की पढ़ाई-लिखाई का प्रबंध आदि।

सामाजिक सुधार के कार्य

छोटी आयु में विधवा हो जाने वाली लड़की का जीवन नर्क बनकर रह जाता था। अहिल्या ने उसके पुन: विवाह का समर्थन किया।

पति की मृत्यु होने पर पत्नी का उसकी सम्पत्ति पर अधिकार होना चाहिए। अहिल्या इसकी पक्षधर थी।

धर्म-नीति

देवी अहिल्याबाई बहुत धार्मिक महिला थीं। उन्होंने अपने राज्य और राज्य के बाहर भी पूरे भारतवर्ष में अनेक तीर्थ स्थानों पर अन्नक्षेत्रों का संचालन किया। यात्रियों की सुविधा के लिए कुएँ, बावड़ी, तालाब, नदी के घाट और धर्मशालाएँ बनवाईं। विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा तोड़ दिए गए मंदिरों का पुन: निर्माण और नए मंदिर भी बनवाएँ। इन कार्यों को करके उनकी कीर्ति अमर हो गई।

असाधारण धीरता

देवी अहिल्याबाई होळकर के पति खण्डेराव कम आयु में ही युद्ध में मारे गए। बाद में श्वसुर श्री मल्हारराव होळकर भी दिवंगत हो गए।

पुत्र मालेराव भी युवा अवस्था में ही नहीं रहा। अहिल्याबाई पर दुखों के पहाड़ टूट पड़े। मालवा के राज्य पर कई अपनों और पराओं की गिद्ध दृष्टि लगी हुई थी। अहिल्याबाई ने अटल चट्टान बनकर सारी विपत्तियाँ सहीं और मालवा की प्रजा का पालन-पोषण करती रहीं।

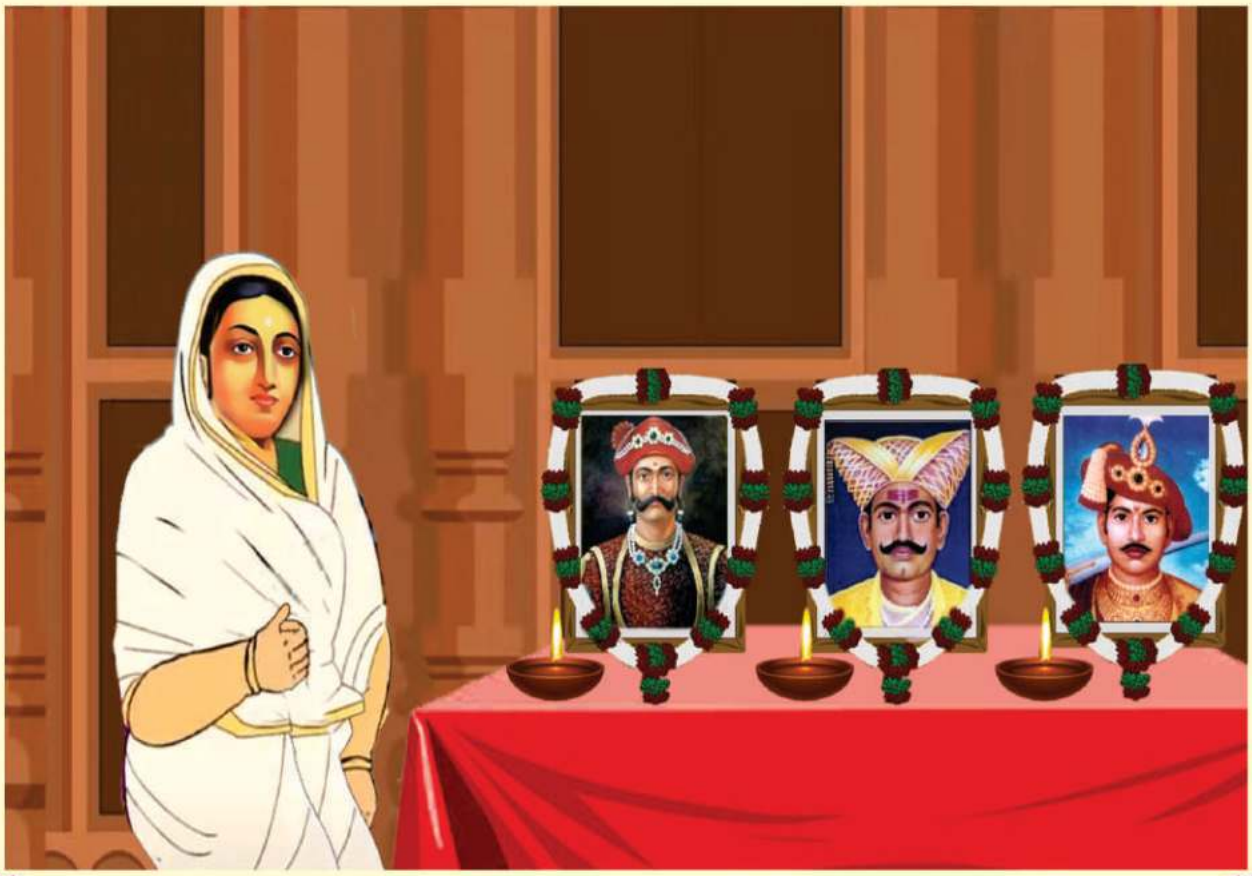

लोकमाता

विषम राजनैतिक परिस्थियों के चलते देवी अहिल्याबाई ने मालवा राज्य की राजधानी इंदूर (इन्दौर) से ले जाकर नर्मदा किनारे महेश्वर में स्थानांतरित कर दी। वहाँ आवश्यकता होने पर युद्ध करने के अतिरिक्त, कलाकारों, धर्मस्थानों, कारीगरों और कृषकों आदि के चहुँमुखी विकास के लिए उन्होंने जो कार्य किए उनके फल स्वरूप उन्हें पुण्यश्लोका, लोकमाता, देवी की प्रतिष्ठा मिली।

शिवमयी अहिल्या

देवी अहिल्याबाई महारानी होकर भी संन्यासी जैसी विरक्त थीं। वे श्वेत साड़ी ही धारण करतीं और सदैव शिव में अपना ध्यान लगाए, शिव को साक्षी मान उन्हीं की प्रतिनिधि के रूप में, केवल अपना कर्त्तव्य मान राजकाज चलाती रहीं। उनका व्यक्तिगत जीवन अत्यन्त सादा और निष्पाप, निष्कपट, निर्लोभी था।

ऐसी थी लोकमाता पुण्यश्लोक देवी अहिल्याबाई होळकर। १३ अगस्त १७९५ को श्री तुकोजीराव होळकर को राज्य का उत्तराधिकार सौंप कर वे इस लोक में अमर होकर यश रूप में आज भी विद्यमान हैं।

देवपुत्र द्वारा आयोजित प्रतियोगिता एवं पुरस्कारों के लिए प्रविष्टियाँ आमंत्रित

सामान्य नियम:-

* एक प्रतियोगिता/पुरस्कार के लिए एक ही प्रविष्टि भेजें।
* प्रविष्टि के ऊपर प्रतियोगिता/पुरस्कार का नाम एवं अंत में अपना नाम, पूर्ण पता, मोबाईल नं. एवं रचना का स्वरचित होने का प्रमाण-पत्र अवश्य दीजिए।
* रचनाएँ हिन्दी में हों। हस्तलिखित रचनाएँ डाक से ही 'देवपुत्र' ४०, संवाद नगर, इन्दौर-४५२००१ (म.प्र.) पर भेजें। टाईप की हुई रचनाएँ इस मेल editordevputra@gmail.com पर भी भेज सकते हैं। हस्तलिखित रचना का फोटो खींचकर मेल न करें।
* प्रविष्टि भेजने की अंतिम तिथि ३१ जनवरी २०२४ है।
* निर्णायकों का निर्णय सर्वमान्य होगा।
* सभी रचनाओं का प्रकाशन अधिकार 'देवपुत्र' का होगा।

श्री भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता २०२३

यह प्रतियोगिता **'देवपुत्र'** के पूर्व व्यवस्थापक स्व. श्री शांताराम शंकर भवालकर जी की स्मृति में आयोजित है। प्रतियोगिता केवल बच्चों के लिए है। बच्चे किसी भी विषय पर अपनी स्वयं की बनाई बाल कहानी भेज सकते हैं।

पुरस्कार निम्न प्रकार से हैं-

प्रथम	द्वितीय	तृतीय	प्रोत्साहन पुरस्कार (२)
१५००/-	११००/-	१०००/-	५००/- ५००/-

मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०२३

डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ 'देवपुत्र' के माध्यम से आयोजित इस वर्ष यह पुरस्कार जनवरी २०२३ से दिसम्बर २०२३ के मध्य प्रकाशित **'हिन्दी बाल उपन्यास की पुस्तक'** के लिए निश्चित किया गया है। पुरस्कृत कृति को प्रमाण-पत्र सहित ५०००/- पुरस्कार निधि प्रदान की जाएगी। प्रविष्टि हेतु प्रकाशित पुस्तक की ३ प्रतियाँ भेजना आवश्यक है।

डॉ. परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार २०२३

डॉ. परशुराम शुक्ल द्वारा 'देवपुत्र' के माध्यम से आयोजित यह पुरस्कार इस वर्ष **'छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन प्रसंग पर आधारित एकांकी'** के लिए निश्चित किया है। पुरस्कार होंगे-

प्रथम	द्वितीय	तृतीय	प्रोत्साहन पुरस्कार (२)
१५००/-	१२००/-	१०००/-	५००/- ५००/-

केशर पूरन स्मृति पुरस्कार २०२३

वरिष्ठ साहित्यसेवी श्री रमेश जी गुप्ता द्वारा उनके पूज्य माता-पिता की स्मृति में स्थापित 'केशर पूरन स्मृति पुरस्कार २०२३' देवपुत्र के पुस्तक परिचय स्तंभ में प्रकाशित बाल साहित्य की किसी एक श्रेष्ठ कृति पर प्रदान किया जाता है। जनवरी २०२३ से दिसम्बर २०२३ तक प्रकाशित पुस्तक का चयन कर निर्णायक द्वारा घोषित किया जाएगा।

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२१-२०२३ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०८/२०२३ | प्रेषण तिथि ३०/०८/२०२३ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

जुलाई २०२२ के अंक से देवपुत्र का संशोधित मूल्य निम्नानुसार है।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता २००/- १५ वर्षीय सदस्यता २०००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १५०/- प्रति अंक

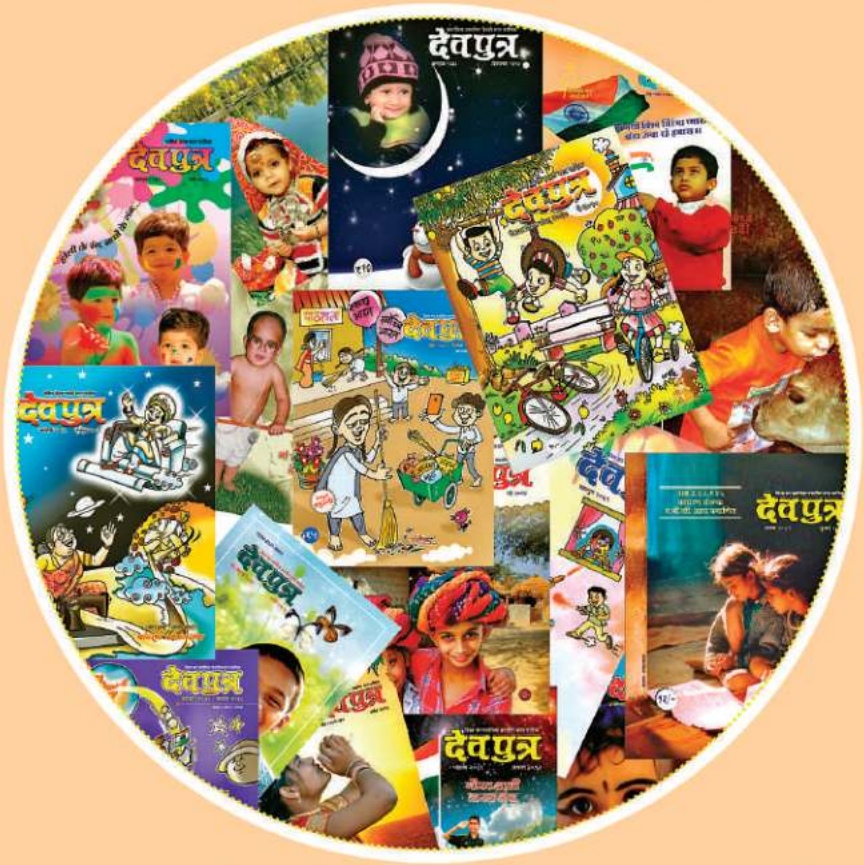

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल
'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना